UPSC MAIN EXAMS

हिन्दी साहित्य- प्रश्नपत्र-II

(PYQ- Previous years Questions:1985-2023)

प्रश्न पत्र-2 : खंड 'क' (पद्य भाग)

कबीर : कबीर ग्रंथावली

- *'गुरूदेव कौ अंग', 'सुमिरन कौ अंग,' और 'बिरह कौ अंग' के आधार पर कबीर की भक्ति-भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।*
- *'कबीर की आधी से अधिक रचना दार्शनिक पद्य मात्र है, जिसको कविता नहीं कहना चाहिए।'' निर्धारित अंशों से उदाहरण देकर इस कथन की युक्तियुक्त परीक्षा कीजिए।*
- *'कबीर के भाव सीधे हृदय से निकलते हैं और श्रोता पर सीधे चोट करते हैं'- इस कथन के प्रकाश में कबीर के काव्य की शक्ति का विवेचन कीजिए।*
- *कबीर ने एक ऐसे भक्ति मार्ग का प्रतिपादन किया जिसमें परमात्मा की एकता के आधार पर मनुष्यों की एकता की प्रतिष्ठा की गई थी। μ इस कथन पर विचार कीजिए।*
- *'कबीर के काव्य में जितनी प्रखरता और तीखापन है, उतनी ही भाव-प्रवणता एवं सहजता भी है।' इस कथन की युक्तियुक्त एवं उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।*
- *'युगावतार की शक्ति और विश्वास लेकर वे पैदा हुए थे और युग प्रवर्त्तक की दृढ़ता उनमें विद्यमान थी, इसलिए वे युग प्रवर्त्तन कर सके।' कबीर के साहित्य के संदर्भ में इस कथन की युक्तियुक्त मीमांसा कीजिए।*
- *कबीरदास के दार्शनिक सिद्धान्तों के स्रोतों का सप्रमाण निरूपण कीजिए।*
- *'कबीर स्वभाव से संत, प्रकृति से उपदेशक और ठोकपीट कर कवि हो गए हैं।' इस कथन के औचित्य की परीक्षा कीजिए।*
- *'कबीर भाषा के डिक्टेटर थे।'- इस कथन के आधार पर कबीर की भाषा का विवेचन कीजिए।*
- *कबीर की भक्ति स्वदेशी है या विदेशी μ तर्क और प्रमाण के साथ अपना पक्ष प्रस्तुत कीजिए।*
- *'कबीरदास का मूलरूप उनका भक्त रूप है, कविरूप घलुआ मात्र है' μ हजारी प्रसाद द्विवेदी के इस कथन के संबंध में सोपपत्ति अपना मन्तव्य पुष्ट कीजिए।*
- *निर्गुण भक्ति धारा में कबीर का स्थान निर्धारण करते हुए कबीर की साधन पद्धति पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।*
- *'कबीर एक ओर तो अद्वैतवाद के समर्थक हैं और दूसरी ओर भगवद् भक्ति के दृढ़ स्तम्भ।' समीक्षा कीजिए।*
- *'कबीर शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव-ज्ञान को अधिक महत्व देते थे।' इस मत की समीक्षा कीजिए।*
- *वर्तमान सामाजिक संदर्भों में कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।*
- *'सामंती समाज की जड़ता को तोड़ने का जैसा प्रयास कबीर ने किया वैसा प्रयास कोई दूसरा नहीं कर सका' - इस कथन के आधार पर कबीर के कृतित्व का सोदाहरण मूल्यांकन कीजिए।*
- *कबीर के काव्य पर निम्नलिखित दर्शनों के प्रभाव का विवेचन कीजिए:*
- *भारतीय षड्-दर्शन, (ख) जैन-बौद्ध दर्शन, (ग) इस्लाम और सूफी दर्शन*
- *'कबीर की भाषा सधुक्कड़ी थी'-इस कथन के औचित्य पर सोदाहरण विचार कीजिए।*
- *''कबीर की कविता में प्रेम केवल संवेदना ही नहीं, अवधारणा के रूप में भी है। वह केवल राम के विरह*

का ही नहीं, कवि के सामाजिक विवेक का भी प्रतिमान है''- इस कथन की पुष्टि कीजिए।

- *''कबीर जनता के कवि थे और जनता के प्रति उनके हदय में असीम करूण और अनुराग का भाव था।' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।*
- *क्या कबीर ने अनीश्वरत्व के निकट पहुँच चुके भारतीय जनमानस को निर्गुण ब्रहा की भक्ति की ओर प्रवृत होने की उतेजना प्रदान की ? तर्क सम्मत उत्तर दीजिए।*
- *'भक्ति-आन्दोलन का जन-साधारण पर जितना व्यापक प्रभाव हुआ, उतना किसी अन्य आन्दोलन का नहीं' इस कथन की सार्थकता पर विचार करते हुए कबीर की भूमिका पर प्रकाश डालिए!*
- *कबीर की कविता 'अस्वीकार' के साथ-साथ स्वीकार की भी कविता है। इस कथन के संदर्भ में कबीर काव्य का विश्लेषण कीजिये।*
- *नीरस निर्गुण मत में कबीर ने 'ढाई आखर' जोड़ने की पहल किससे प्रेरित हो कर की और क्यों? अपने कथन की पुष्टि कीजिये।*
- *कबीर की भाषा सधुक्कडी है।' इस कथन पर विचार कीजिए।*
- *कबीरदास के रचना संसार में निहित समाज-चिंता पर प्रकाश डालिए।*
- *कबीर वाणी के डिक्टेटर हैं। " इस कथन के आलोक में कबीर की अभिव्यंजना शैली पर विचार कीजिए।*
- *कबीर-वाणी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कितनी प्रासंगिक है? उदाहरण सहित लिखिए।*

भ्रमरगीत-सार

(सूरदास)

- *'जिस क्षेत्र को सूर ने चुना है उस पर उनका अधिकार अपरिमित है, उसके वे सम्राट् है।' भ्रमरगीत सार के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।*
- *'सूर को उपमा देने की झक सी चढ़ जाती है और वे उपमा पर उपमा, उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा कहते चले जाते हैं।' इस सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए 'भ्रमरगीत' की अलंकार-योजना पर विचार कीजिए।*
- *''प्रेम नाम की मनोवृत्ति का जैसा विस्तृत और पूर्ण परिज्ञान सूर को था, वैसा और किसी कवि को नहीं'' 'भ्रमरगीतसार' मे संगृहीत पदों के आधार पर विचार कीजिए।*
- *'सूरदास में जितनी सहृदयता और भावुकता है, प्रायः उतनी चतुरता और वाग्विदग्धता भी है'µ भ्रमरगीतसार को ध्यान में रखते हुए इस कथन के औचित्य की परीक्षा कीजिए।*
- *'सूरदास के भ्रमरगीत में वचन की भावप्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम-प्रसूत अन्तवृत्तियों का उद्धाटन परम मनोहर है।' 'भ्रमरगीतसार' के आधार पर इस वक्तव्य की सोदाहरण मीमांसा कीजिए।*
- *'भ्रमरगीत' की गोपियों द्वारा सूर ने निर्गुण भक्ति पद्धति की अपेक्षा सगुण रागानुराग भक्ति की महत्ता प्रतिपादित की है। व्याख्या कीजिए।*
- *'चरम भक्ति भाव को उत्कृष्ट काव्य रूप देने में सूरदास को अनन्य सफ़लता मिली है।' इस कथन के तथ्य को 'भ्रमरगीत के आधार पर निरूपित कीजिए।*
- *बिंब-विधान की दृष्टि से सूर के भ्रमरगीत का मूल्यांकन कीजिए।*
- *'भ्रमरगीत' में वर्णित गोपियों के विरह की विशदता, व्यापकता एवं मार्मिकता का विवेचन कीजिए।*
- *'भ्रमरगीत सार' में निहित गोपियों का पक्ष तर्क और उदाहरणों की पीठिका पर उपस्थापित कीजिए।*
- *'भमरगीत में ज्ञानमार्ग और गंतव्य 'मुक्ति' पर रागमार्ग और साध्य भक्ति की विजय निरूपित है।' तर्क और प्रमाण द्वारा पुष्ट कीजिए।*
- *'भ्रमरगीत' में व्यक्त विरह-व्यंजना की पद्धति को उदाहरणों के साक्ष्य पर स्पष्ट कीजिए।*
- *'भ्रमरगीत' सूर-सागर का एक मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्ध्यपूर्ण अंश है जो ब्रजांगनाओं की वचनवक्रता, उपालम्भ, तन्ययता, संवाद- शैली*

आदि की दृष्टियों से हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है।' इस उक्ति के संबंध में अपने पक्ष को तर्क और प्रमाण के साथ प्रस्तुत कीजिए।

- 'भ्रमरगीत के बहाने निर्गणोपासना की धज्जियाँ उड़ाने में सूर ने कोई कसर नहीं छोड़ी है।' इस कथन के संबंध में अपना मत प्रस्तुत कीजिए।
- भ्रमरगीत में अभिव्यक्ति सूर की भक्ति-भावना का सांगोपांग विवेचन कीजिए।
- 'भ्रमर-गीत सार' के दार्शनिक पक्ष की विवेचना करते हुए उसके काव्यगत महत्त्व की समीक्षा कीजिए।
- 'सूर का काव्य अप्रस्तुत विधान की खान है', - इसको सप्रमाण सिद्ध कीजिए।
- सूरदास की भक्तिभावना और काव्य-कौशल का परिपाक भ्रमरगीत प्रसंग में किस तरह हुआ है? विश्लेषण कीजिए।
- बताइए कि किस प्रकार सूर की काव्यकला पौराणिकता मे नवीनता का संचार करके प्रसंगों को विशिष्ट और लोकग्राह्य बना देती है।
- सोदाहरण स्पष्ट कीजिए कि सूर ने योगमार्ग को संकीर्ण, कठिन और नीरस तथा भक्तिमार्ग का विशाल, सरल और सरस क्यों कहा है?
- सूर के काव्य में जितनी सहृदयता है उतनी वाग्विदग्घता भी। स्पष्ट कीजिये।
- भ्रमरगीत के माध्यम से सूरदास ने किस प्रकार अपनी गहन भक्ति-भावना और अप्रतिम काव्य-कला का परिचय दिया है? विवेचन कीजिए।
- काव्य जीवन को अर्थवत्ता प्रदान करता है और काव्य की अर्थवत्ता बिम्ब से निर्मित होती हैं। इस कथन के आलोक में सूरदास के काव्य का मूल्याकंन कीजिये।
- हिन्दी भ्रमरगीत-परंपरा में सूरदास कृत भ्रमरगीत का वैशिष्ट्य निरूपित कीजिये।
- 'भ्रमरगीत' की अवधारणा पर विचार करते हुए गोपियों की वग्विदग्धता का परिचय दीजिए।
- 'सूरदास में जितनी सहृदयता और भावुकता है, प्रायः उतनी चतुरता और वाग्विदग्धता भी है।' 'भ्रमरगीत-सार' के पारिप्रेक्ष्य में विवेचना कीजिए।
- ''सूरदास द्वारा भ्रमरगीत प्रसंग की योजना का मुख्य उद्देश्य निर्गुण पर सगुण की विजय दिखाना है।'' इस कथन की युक्तिसंगत समीक्षा कीजिए।
- 'भ्रमरगीत सार' के आधार पर सूरदास की काव्य-चेतना एवं कवित्व की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

तुलसीदास- रामचरित मानस-सुंदर काण्ड और कवितावली-उत्तर काण्ड)

- 'कवितावली' (उत्तरकाण्ड) के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास की भक्तिभावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
- 'कवितावली' का उत्तरकांड रामकथा के निर्वाह में साधक नहीं है। तुलसीदास ने उसकी रचना जिस उद्देश्य से की है, उसका निरूपण कीजिए।
- कवितावली की काव्य-शैली पर प्रकाश डालिए।
- काव्य-काल की दृष्टि से 'कवितावली' का मूल्यांकन कीजिए।कवितावली (उत्तरकांड) के आधार पर तुलसीदास के जीवन और युगीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।
- 'कवितावली में काव्य, सौन्दर्य, भक्ति तथा युग-बोध का अपूर्व समन्वय हुआ है।' विवेचन करें।
- 'कवितावली का काव्य-सौंदर्य गोस्वामी जी के प्रातिभ- संस्पर्श से निखर उठा है' का सारगर्भ आवश्यक स्पष्ट करते हुए उदाहरणों की पीठिका पर अपना मंतव्य व्यक्त कीजिए।
- 'भगति हेतु बिधि भवन बिहाई, सुमिरत सारद आवति धाई' शास्त्रीय एवं व्यवहारिक दृष्टि से तुलसीदास की भक्ति का विवेचन कीजिए।
- 'कवितावली को आप मुक्तक रचना मानते हैं या प्रबंध रचना।' सप्रमाण अपने मत का समर्थन कीजिए।
- सुन्दरकाण्ड के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के काव्य-सौष्ठव का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

- *'रामचरितमानस' के सुंदरकाण्ड तथा 'कवितावली' के उत्तरकाण्ड के आधार पर तुलसीदास की भक्तिभावना का स्वरूप विशद कीजिए।*
- *क्या कवितावली के उत्तरकाण्ड में तत्कालीन समाज के यथार्थ का भरा-पूरा चित्र मिलता है? सोदाहरण उत्तर दीजिए।*
- *तुलसीदास के प्रबंध-कौशल के वैशिष्ट्य का मूल्यांकन कीजिए।*
- *तुलसी और जायसी की काव्य-भाषा और संवेदनात्मक गहनता का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।*
- *क्या समकालीन आलोचना तुलसीदास के काव्य की प्रगतिशीतला को अनदेखा कर रही है? उदाहरणों से पुष्ट युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।*
- *'सुंदर' शब्द पर विचार करत करते हुए सुंदरकांड के वस्तु-शिल्प-सौन्दर्य की विवेचना कीजिये।*
- *'कवितावली' के भाव सौंदर्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।*
- *'कवितावली' में निहित युगीन संदर्भों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।*
- *गोस्वामी तुलसीदास रचित 'कवितावली' के उत्तरकाण्ड की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।*

पदमावत (जायसी)

- *'पदमावत एक उत्कृष्ट प्रेम-काव्य है।' इस मत की सतर्क व्याख्या कीजिए।*
- *नागमती-वियोग खंड के आधार पर जायसी की काव्य-कला के विविध पक्षों का विवेचन कीजिए।*
- *सूफी दर्शन के सन्दर्भ में 'पद्मावत' की प्रेमाभिव्यंजना का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।*
- *'फूल मरै पै मरै न बासू'- इस कथन के आधार पर जायसी की प्रेम-व्यंजना के महत्व का आकलन कीजिए।*
- *जायसी कितने सूफी हैं और कितने कवि हैं? प्रमाण सहित उत्तर दीजिए।*
- *पद्मावत में लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।*
- *जायसी कृत 'पद्मावत' और तुलसीकृत 'रामचरित मानस' की काव्य-भाषा का तुलनात्मक आकलन कीजिए।*
- *'पद्मावत' में कल्पना में इतिहास का पैबन्द लगाने वाली काव्या-चेतना के पीछे क्या कारण हो सकते हैं?*
- *ठेठ अवधी भाषा के माधुर्य और भावों की गंभीरता की दृष्टि से 'पद्मावत' महाकाव्य निराला है। विवेचन कीजिए।*
- *अवधी भाषा में रचित 'पद्मावत' प्रेम और दर्शन का अदभुत महाकाव्य है। संवेदनशील उत्तर दीजिये।*
- *'पद्मावत' काव्य में वर्णित विरह-भावना विप्रलंभ शृंगार की सैद्धांतिक सीमाओं का किन-किन संदर्भों में उल्लंघन करती दिखाई देती है? विश्लेषण कीजिए।*
- *जायसी कृत 'पदमावत' में वर्णित प्रेम और दर्शन, सौंदर्य भाव-गांभीर्य और माधुर्य की त्रिवेणी से उद्भासित है। इस कथन के संदर्भ में जायसी की प्रेम-व्यंजना का विवेचन कीजिये।*
- *जायसी की सौन्दर्य-संचेतना में उनकी ऊहा शक्ति साधक रही है या बाधक? सोदाहरण समझाइये।*
- *"'पद्मावत' में आध्यात्मिक प्रेम की झाँकियाँ विद्यमान हैं।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? सोदाहरण समझाइए।*
- *"जायसी ने इतिहास और कल्पना के सुंदर समन्वय से यह अत्यंत उत्कर्ष का महाकाव्य दिया है।"इस कथन के आधार पर 'पद्मावत' की समीक्षा कीजिए।*
- *"जायसी ने नागमती वियोग-वर्णन द्वारा नारी की व्यथा-कथा को प्रस्तुत किया है।" इस कथन से आप कितने सहमत है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।*
- *जायसी के 'पद्मावत' के सिंहलद्वीप खण्ड की भावभूमि स्पष्ट कीजिए।*

बिहारी-रत्नाकर (बिहारी)

- *बिहारी के काव्य में कल्पना की समाहार-शक्ति के साथ भाषा की समास-शक्ति का कितना सामंजस्य मिलता है। प्रमाण सहित उत्तर दीजिए।*
  (क) रीतिकाल में कविवर बिहारी की अपनी अलग पहचान है। तर्क-युक्त उत्तर दीजिए।
  (ख) सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर, देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर',
  इस दोहे के आलोक में बिहारी की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
- *बिहारी के काव्य में चित्रित प्रेम और सौन्दर्य सांसारिकता से निबद्ध हैं- विवेचन कीजिए।*
- *'जो कोई रस-रीति को समुझै चाहे सार, पढ़ै बिहारी-सतसई कविता को सिंगार' -इस उक्ति के आधार पर बिहारी की 'रस-रीति' की विवेचना कीजिए।*
- *बिहारी के काव्य एवं उनकी कवि-दृष्टि की सौन्दर्यशास्त्रीय मीमांसा के प्रतिमानों पर प्रकाश डालिए।*
- *बिहारी की कविता के साक्ष्य के आधार पर ये बताइए कि कवि की धर्म और दर्शन के क्षेत्रें में पैठ थी।*
- *बिहारी के दोहों में नीति, भक्ति, शृंगार की त्रिवेणी प्रवाहित है। स्पष्ट कीजिये।*
- *बिहारी की काव्यकला अपनी ध्वनिक्षम-संभावनाओं के साथ-साथ रसाभिव्यक्ति में भी पूरी तरह सक्षम हैं। तर्कसम्मत उत्तर प्रस्तुत कीजिये।*
- *बिहारी की सूक्ष्म सौंदर्य दृष्टि का निरूपण कीजिए।*
- *"बिहारी ने अन्योक्तियों व सूक्तियों के माध्यम से जीवन के सत्य का सजीव वर्णन किया है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।*
- *"बिहारी की कविता शृंगारी है पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँच पाती।" इस कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।*

भारत-भारती
(मैथिलीशरण गुप्त)

- *नवजागरण के मूलभूत तत्वों की अभिव्यक्ति 'भारत-भारती' में किस प्रकार हुई है? समीक्षा कीजिए।*
- *सांस्कृतिकता और राष्ट्रीयता के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर के काव्य का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।*
- *'भारत भारती' में अभिव्यक्त कवि की पुनरुत्थानवादी दृष्टि एवं राष्ट्रीय चेतना के द्वन्द्व की समीक्षा कीजिए।*
- *आज के संदर्भ मे 'भारत-भारती' का विवेचन कहाँ तक संगत प्रतीत हो ता है? विवेचन कीजिए।*
- *क्या आप समझते हैं कि 'भारत-भारती' में व्यक्त कवि के कतिपय विचार पुराने पड़ गए हैं और उनसे सहमत होना कठिन है। इस संदर्भ 'भारती-भारती' की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।*
- *मैथिलीशरण गुप्त की आधुनिक हिंदी कविता के विकास में जो भूमिका है उसे स्पष्ट कीजिये।*
- *स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक परिप्रेक्ष्य में मैथिलीशण गुप्त की 'भारत-भारती' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।*
- *'भारत-भारती' की राष्ट्रीय-चेतना हिंदू जातीयता पर अवलंबित है। इस कथन के संदर्भ में अपना मत सोदाहरण प्रस्तुत कीजिये।*
- *"गुप्त जी ने 'भारत-भारती' के माध्यम से न सिर्फ अतीत के गौरव का गान किया है, बल्कि वर्तमान को भी झकझोरा है। " इस कथन की विवेचना कीजिए।*
- *"गुप्त जी ने 'भारत-भारती' में अतीत का गौरव गान, वर्तमान को रचनात्मक ऊर्जा एवं जागरण का संदेश देने हेतु किया है।" स्पष्ट कीजीए।*
- *"भारत-भारती' में वर्तमान की त्रासदीपूर्ण स्थिति, वैभवपूर्ण भव्य विरासत एवं उन्नत भविष्य की कामना करते हुए राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हुआ है।" इसे उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।*

कामायनी- चिंता और श्रद्धा सर्ग
(जयशंकर प्रसाद)

- *कामायनी के आधुनिक बोध अथवा 'अंधेरे में' के यथार्थ बोध का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।*
- *'कामायनी' काव्य और दर्शन के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है।' इस मत की परीक्षा कीजिए।*
- *कामायनी के श्रद्धासर्ग के आधार पर कवि की जीवन-दृष्टि एवं उद्देश्य को रेखांकित कीजिए।*
- *छायावादी धारा के महाकाव्य के रूप में कामायनी की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।*
- *कामायनी के काव्य-सौंदर्य की उद्धाटित करते हुए उसमें निहित मिथक तत्व को स्पष्ट कीजिए।*
- *'प्रसाद ने प्रवृति के कोमल और प्रलयकारी दोनों रूपों का चि=ण किया है।''µ कामायनी में प्रवृति-वर्णन की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उपर्युक्त कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।*
- *दिनकर जी ने कामायनी को 'दोष-रहित दूषण-सहित' - कहकर क्या कहना चाहा है- संभावनाओं का आंकलन करते हुए अपनी वैचारिक प्रतिक्रिया व्यक्त कीजिए।*
- *ध्वन्यात्मकता, लाक्षिणकता, उपचारवक्रता और अनुभूति की विवृति को छायावाद की विशेषता मानने वाले प्रसाद ने उसे 'कामायनी' में कैसा मूर्त किया है? स्पष्ट कीजिए।*
- *कामायनी के अंगीरस का निरूपण रसवादी समीक्षा-पद्धति से कीजिए।*
- *'कामायनी में जयशंकर प्रसाद ने मानवमन एवं मानवता के विकास की कहानी*
- *'कामायनी में प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृतियों का सुन्दर समन्वय मिलता है।'µ इस कथन की तर्कयुक्त विवेचना प्रस्तुत कीजिए।*
- *कामायनी में अभिव्यक्ति आनन्दवाद और समरसता का सोदाहरण विवेचन कीजिए।*
- *छायावाद की प्रमुख विशेषताओं के आधार पर 'कामायनी' का मूल्यांकन कीजिए।*
- *'कामायनी' में चित्रित मानव-सभ्यता के विकास की विभिन्न स्थितियों और समस्याओं का विवेचन कीजिए।*
- *'कामायनी' का समरसता- संदेश वर्तमान जीवन-स्थितियों में कहाँ तक प्रासंगिक है? तर्क संहित बतलाइए।*
- *रूपक तत्व की दृष्टि से 'कामायनी' की विवेचना करते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।*
- *'कामायनी' को जयशंकर प्रसाद की अन्यतम काव्यकृति क्यों कहा जाता है? सतर्क और सोदाहरण अपने मत का उपस्थापन कीजिए।*
- *'कामायनी उज्ज्वल चेतना का सुंदर इतिहास है'- इस कथन से आप कहां तक सहमत हैं?*
- *''बुद्धिवाद के विकास में, अधिक सुख की खोज में, दुख मिलना स्वाभाविक है।'' कामायनी' के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।*
- *'जयशंकर प्रसाद और उनकी कामायनी' विषय पर एक नातिदीर्घ समीक्षात्मक आलेख प्रस्तुत कीजिये।*
- *कामायनी के आधार पर जयशंकर प्रसाद की सौंदर्य-चेतना पर प्रकाश डालिये।*
- *'रामचरितमानस' के बाद 'कामायनी' एक ऐसा प्रबंध काव्य है जो मुनष्य के संपूर्ण प्रश्नों का अपने ढंग से कोई न कोई संपूर्ण उत्तर देता है। विचार कीजिये*
- *कामायनी को 'चेतना का सुंदर इतिहास' और 'अखिल मानव-भावों का सत्य' - शोधक काव्य क्यों कहा गया है? अपने विचार प्रस्तुत कीजिये।*
- *'कामायनी' विषम परिस्थितियों में जीवन के सृजन का महाकाव्य है।' स्पष्ट कीजिए।*
- *'प्रसाद मूलतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं।' इस कथन के आधार पर 'कामायनी' में अभिव्यक्त प्रेम एवं सौन्दर्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।*
- *''कामायनी' का गौरव उसके युगबोध, परिपुष्ट चिंतन, महत उद्देश्य और प्रौढ़ शिल्प में निहित है।'' इस कथन की विवेचना कीजिए।*

- *जयशंकर प्रसाद रचित 'कामायनी' के महाकाव्यत्व का विश्लेषण कीजिए।*

राम की शक्ति पूजा और कुकुरमुत्ता
(निराला)

- *भाव-व्यंजना की दृष्टि से 'सरोज-स्मृति' और 'राम की शक्ति-पूजा' शीर्षक कविताओं की तुलना कीजिए। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविताओं में आप किसे श्रेष्ठ मानते हैं?*
- *वस्तु वर्णन की दृष्टि से 'राम की शक्तिपूजा' और 'अन्धेरे में' शीर्षक कविताओं पर विचार कीजिए। आप दोनों में किसे श्रेष्ठ कविता मानते हैं?*
- *'धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध' पंक्ति के आधार पर 'राम की शक्ति पूजा' की द्वन्द्वात्मक संरचना पर प्रकाश डालिए।*
- *'वह एक और मन रहा राम का जो न थका'µ यह पंक्ति 'राम की शक्ति पूजा' के केन्द्रीय संवेदना की वाहक है। परीक्षा कीजिए।*
- *निराला ने महाकाव्य की रचना नहीं की है, पर उन के कथात्मक काव्य में इस शैली के अनेक तत्व पाये जाते हैं। उनकी प्रमुख कविताओं को दृष्टि में रखते हुए इस कथन की विवेचना कीजिए।*
- *'राम की शक्ति पूजा' काव्य की शिल्प की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।*
- *'राम की शक्ति-पूजा' का विषय आख्यानों जैसा है, जिसमें वस्तु-योजना के साथ-साथ कवि को कल्पना के प्रसार के लिए भी अवसर मिला है।'' समीक्षा कीजिए।*
- *'राम की शक्ति पूजा' में कवि ने युग-सत्य के साथ सार्वकालिक सत्य की भी व्यंजना की है।''µ प्रमाण और उपपत्ति दीजिए।*
- *'राम की शक्ति-पूजा' में महाकाव्योचित औदत्य की स्थिति लक्षित होती है।' इस कथन पर अपने पक्ष को तर्क और प्रमाण के साथ प्रस्तुत कीजिए।*
- *देश के अभ्युत्थान के लिए शक्ति की उपासना आवश्यक है। 'राम की शक्ति-पूजा' को दृष्टिगत कर निरालाजी की शक्ति विषयक अवधारणा काव्य में चित्रित चरित्रें के तत्वों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।*
- *'राम की शक्ति-पूजा' नामक लंबी प्रबंधात्मक कविता में महाकाव्यात्मक गरिमा विद्यमान है। इस कथन के आलोक में उसके काव्य-रूप को स्पष्ट करते हुए कविता के काव्य-सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।*
- *'राम की शक्ति पूजा' और कुकुरमुता की संवदेना के भिन्नता को रेखांकित करते हुए निराला की शैलीगत विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।*
- *'राम की शक्ति पूजा' के आधार पर निराला की चरित्र-चि चित्रण कला की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।*
- *'कुकुरमुत्ता' के संदर्भ में निराला की प्रगतिशील चेतना पर प्रकाश डालिए।*
- *निराला अपने समय की आवश्यकतानुसार प्रसंग का चयन, प्रसंग का विस्तार तथा प्रसंग की व्याख्या करते थे। क्या निराला की यह विशेषता 'राम की शक्ति-पूजा' में भी दृष्टिगोचर होती है? युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।*
- *निराला जीवन के राग-विराग के विशिष्ट कवि हैं- विवेचन कीजिए।*
- *इस बात पर विचार कीजिए कि 'राम की शक्तिपूजा' की संरचना में एक पराजित और दूसरे अपराजित मन की अस्तित्वानुभूति के साथ-साथ 'तुलसीदास' और 'सरोज-स्मृति' का सार सन्निहित है।*
- *सोदाहरण विवेचित कीजिए कि 'राम की शक्तिपूजा' के बाद निराला की रचनाओं में आकांक्षा-पूर्ति के स्वप्न क्रमशः कम होते गए हैं।*
- *सोदाहरण विवेचित कीजिये कि 'राम की शक्तिपूजा' के बाद निराला की रचनाओं में आकांक्षा पूर्ति के स्वप्न क्रमशः कम होते गए हैं।*
- *'राम की शक्तिपूजा' का आज के समय में नया पाठ क्या हो सकता है, स्पष्ट कीजिये।*

- "निराला कृत 'कुकुरमुत्ता' में व्यंग-विद्रूप के साथ भारतीय अस्मिता का जयघोष है" – युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।
- 'राम की शक्ति पूजा' में निराला के आत्मसंघर्ष की भी व्यथा-कथा है।' सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
- 'राम की शक्तिपूजा' एक पराजित मन और दूसरे अपराजित मन के अस्तित्व की अनुभूति है। इस कथन की व्याख्या करते हुए निराला के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।
- भाव,भाषा एवं विचार की दृष्टि से निराला की 'कुकुरमुत्ता' कविता का मूल्यांकन कीजिए।
- 'कुकुरमुत्ता' की प्रगतिशील चेतना की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

कुरूक्षेत्र
(दिनकर)

- युद्ध और शांति की समस्या वास्तव में सामाजिक समता की समस्या है- 'कुरुक्षेत्र' के आधार पर विचार कीजिए।
- दिनकर की काव्य भाषा की उन विशेषताओं पर उदाहरण-सहित विचार कीजिए जो उन्हें लोकप्रिय बनाती हैं।
- दिनकर की रचनाओं के संदेश अपनी भाषा में लिखिये।
- युद्ध की विभीषिका को दिनकर ने अपने काव्य 'कुरुक्षेत्र' में किस प्रकार रेखांकित किया है? समीक्षा कीजिए।
- दिनकर की रचना 'कुरुक्षेत्र' के सृजन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयोजन 'शिवेतरक्षतये' भी है। अपने मत को सोदाहरण एवं तर्कसहित प्रस्तुत कीजिये।
- कुरुक्षेत्र में प्रबुद्ध उद्विग्न मानस का जो द्वन्द्व चित्रित हुआ है, उससे उसकी प्रबंधात्मकता भी प्रभावित हुई है। पक्षापक्ष विमर्श कीजिये।
- "'कुरुक्षेत्र' एक साधारण मनुष्य का शंकाकुल हृदय है, जो मस्तिष्क के स्तर पर चढ़कर बोल रहा है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।
- "दिनकर युगचेता कवि हैं।" कुरुक्षेत्र से उदाहरण देते हुए इस कथन की सत्यता प्रमाणित कीजिए।
- "दिनकर ने 'कुरुक्षेत्र' में युधिष्ठिर और भीष्म के माध्यम से अपने ही मानसिक अन्तर्द्वंदों को अभिव्यक्त किया है।" कथन का तर्कपूर्ण विवेचन कीजिए।
- "युद्ध की समस्या मनुष्य की सारी समस्याओं की जड़ है।" इस कथन के आलोक में दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' का मूल्यांकन कीजिए।

असाध्यवीणा
(अज्ञेय)

- 'असाध्य वीणा' के केन्द्र में रखकर अज्ञेय की रचनादृष्टि और जीवन-दर्शन का निरूपण कीजिए।
- अज्ञेय की कविता व्यक्तित्व के खोज की कविता है या व्यक्तित्व के विलयन की? 'असाध्य वीणा' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
- अन्तम् और बाह्य जगत की एकाकारता के सजीव प्रतीक के रूप में' 'असाध्यवीणा' की समीक्षा कीजिए।
- सिद्ध कीजिए कि 'असाध्य वीणा' सृजनात्मकता के रहस्य को उसकी समग्रता में अभिव्यक्त करती है।
- अज्ञेय ने 'असाध्यवीणा' कविता में अनेक मिथको के माध्यम से अभीष्ट एवं सार्थक बिम्ब का सृजन किया है। अज्ञेय की काव्य कला के संदर्भ में विचार कीजिये।
- 'असाध्य वीणा' के किरीटी तरु में जो ध्वनियाँ समाहित हुई और वीणा वादन के बीच जो ध्वनियाँ झंकृत हुई उनके साम्य वैषम्य पर विचार प्रस्तुत कीजिए।
- अज्ञेय द्वारा रचित कविता 'असाध्य वीणा' की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

- *'असाध्य वीणा' कविता का मूल स्रोत क्या है? कवि ने कविता-सृजन की प्रक्रिया को किन स्तरों पर प्रस्तुत किया है?*
- *"असाध्य वीणा' में अज्ञेय के कवि-कर्म का क्रमिक विकास विभिन्न स्तर पर अभिव्यक्त हुआ है।" सम्यक् विवेचना कीजिए।*

ब्रहमराक्षस
(मुक्तिबोध)

- *ब्रहमराक्षस कविता की संवेदनागत तथा शिल्पगत विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।*
- *'ब्रहमराक्षस' की प्रतीकात्मकता पर प्रकाश डालते हुए समझाइए कि इस कविता की भाषा तथा शिल्प कहाँ तक कवि की संवेदना के अनुकूल हैं।*
- *क्या मुक्तिबोध के आत्मसंघर्ष में सामाजिक संघर्ष भी व्यक्त हुआ है? मुक्तिबोध के काव्य के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।*
- *नई कविता के दायरे में रहते हुए मुक्तिबोध की काव्यशैली में प्रगतिशीलता का निर्वहन हुआ है- स्पष्ट कीजिए।*
- *नई कविता के आत्मसंघर्ष का सर्वोत्तम रूप मुक्तिबोध की कविताओं में मिलता है- इस विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए।*
- *समकालीन दौर मे भी मुक्तिबोध की कविता का पुनर्पाठ लगातार हो रहा है। समकालीन कविता में मुक्तिबोध की कविता किस तरह संस्थित है?*
- *मुक्तिबोध की कविता में आधुनिकताबोध के नये आयाम के साथ आत्मबोध के स्वर भी हैं। विचार प्रस्तुत कीजिये।*
- *वैश्वीकृत परिदृश्य में मुक्तिबोध की कविता का पुनर्पाठ प्रस्तुत कीजिए।*
- *मुक्तिबोध ने 'ब्रह्मराक्षस' कविता में फैण्टेसी शैली के माध्यम से कविता जैसी विधा में नाटकीय प्रभाव की सृष्टि की है। इस कथन की तर्क एवं उदाहरण सहित विवेचना कीजिये।*
- *मुक्तिबोध रचित ' ब्रह्मराक्षस' की उपलब्धि है भयानक अंगीरस, तिलस्मी 'वस्तु' और आवेग-कल्पना-संवेदना का संगम। इस कथन की समीक्षा कीजिये।*
- *'ब्रह्मराक्षस के निथकीय प्रयोग' की व्याख्या करते हुए मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी पर प्रकाश डालिए।*
- *'मुक्तिबोध अपनी कविता में एक सच्चा-खरा और संघर्षशील संसार रचते हैं।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।*
- *मुक्तिबोध की कविता 'ब्रह्मराक्षस' में अन्तःस्यूत फैंटेसी को व्याख्यायित कीजिए।*
- *'ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है। इस कथन के आलोक में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।*

बादल को घिरते देखा है,
हरिजन गाथा, अकाल व उसके बाद
नागार्जुन

- *नागार्जुन की काव्य-संवेदना और भाषा-शैली की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।*
- *नागार्जुन को जनकवि क्यों कहा जाता है?*
- *नागार्जुन की कविता लोक-जीवन की भूमि से उग कर, प्रतिबद्धता पर आरूढ़ हो, व्यंग्य के शिखर का स्पर्श करती है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।*
- *बाबा नागार्जुन नये काव्य में किन अर्थों में महत्त्वपूर्ण हैं, स्पष्ट कीजिये।*
- *नागार्जुन की काव्यभाषा पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए।*
- *नागार्जुन की लोक-दृष्टि के आधारभूत तत्त्व कौन-कौन से हैं? समीक्षा कीजिए।*
- *नागार्जुन अकाल को प्राकृतिक अभिशाप के रूप में कम, मानवीय अभिशाप के रूप में ज्यादा देखते हैं। इस कथन के आलोक में नागार्जुन के काव्य की समीक्षा कीजिये।*

- 'अकाल के बाद' कविता की मूल संवेदना को सोदाहरण विवेचित कीजिए।
- 'हरिजन गाथा' कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।
- 'हरिजन गाथा' कविता के आधार पर नागार्जुन की जनवादी दृष्टि की मीमांसा कीजिए।

खंड 'ख' (गद्य भाग)

भारत-दुर्दशा (भारतेन्दु)

- 'भारत दुर्दशा' में प्रतिबिम्बित तत्कालीन भारत की परिस्थितियों और उन्हें लेकर लेखक की चिनताओं का विवेचन कीजिए।
- 'भारत दुर्दशा' में व्यक्त भारतीय नवजागरण की चिन्ता का स्परूप स्पष्ट कीजिए।
- क्या आप इस कथन से सहमत है कि भारतेन्दु युग के गद्य में जिन्दादिली मिलती है? सोदाहरण उत्तर दीजिए।
- भारत-दुर्दशा का हिन्दी नव जागरण से क्या सम्बन्ध है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
- भारतेन्दु के कुछ नाटकों में गदर की साहित्यिक प्रतिक्रिया प्रकट हुई है। 'भारत दुर्दशा' के विशेष संदर्भ में तर्कपूर्ण उत्तर दीजिये।
- 'भारत दुर्दशा' का इच्छित आदर्श क्या है? समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।
- 'भारत-दुर्दशा' प्रायः कथाविहीन, घटनाविहीन नाट्य रचना है। फिर भी इसके मंचन की संभावनाएं कम नहीं हैं। अभिनेयता की दृष्टि से विवेचन कीजिये।
- 'भारत दुर्दशा' में अपने समय की विभीषिका का चित्रण हुआ है।' स्पष्ट कीजिए।
- नागार्जुन की कविता में प्रकृति वर्णन का विवेचन कीजिए।
- "'भारत दुर्दशा' अतीत गौरव की चमकदार स्मृति है, आँसू भरा वर्तमान है और भविष्य-निर्माण की भव्य प्रेरणा है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।
- "'भारत दुर्दशा' नाटक में व्यंग्य को एक जबरदस्त हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गयाहै।" स्पष्ट कीजिए।
- 'भारत दुर्दशा' नाटक अंग्रेजी राज्य की अप्रत्यक्ष रूप से कटु और सच्ची आलोचना है। विश्लेषण कीजिए।
- 'भारत दुर्दशा' एक प्रतीकात्मक नाटक है। विश्लेषण कीजिए।

स्कन्दगुप्त
(जयशंकर प्रसाद)

- स्कंदगुप्त के आधार पर प्रसाद की इतिहास-दृष्टि का विवेचन करते हुए उनकी नाट्य-कला की विशिष्टताओं का विश्लेषण कीजिए।
- क्या इतिहास और कल्पना के सुन्दर योग को प्रसाद की नाट्यकलागत विशेषताओं में सर्वोपरि विशेषता माना जा सकता है? 'स्कंदगुप्त' के संदर्भ में तर्कसम्मत विवेचन कीजिए।
- प्रेक्षकों पर सम्प्रेषणगत प्रभाव की दृष्टि से जयशंकर प्रसाद और मोहन रोकेश के नाटकों का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
- 'स्कन्दगुप्त' में अभिव्यक्ति राष्ट्रीय भावना पर तत्कालीन स्वाधीनता-आन्दोलन के प्रभावों का आंकलन कीजिए।
- क्या 'स्कन्दगुप्त' नाटक में कल्पना और इतिहास के समन्वय से नाटक
- के संप्रेषणगत सौंदर्य में वृद्धि हुई है? तर्कयुक्त उत्तर दीजिये।
- 'स्कन्दगुप्त' नाटक प्रसाद के जीवन-मूल्यों का कौन-कौन संदर्भ उद्घाटित करता है?
- 'जयशंकर प्रसाद के नाटकों के स्त्री-पात्र सदैव श्रेष्ठ रहे हैं।' इस
  कथन के आलोक में 'स्कंदगुप्त' में स्त्री-पात्र-परिकल्पना की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
- 'स्कंदगुप्त' नाटक की प्रमुख समस्या राष्ट्रीय सुरक्षा की समस्या है। प्रसाद

- की नाट्य-दृष्टि के संदर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिये।
- गुप्त-कालीन प्रामाणिक इतिहास का अनुलेखन एवं कल्पनाधारित वस्तु-संयोजन 'स्कंदगुप्त' में परिलक्षित होते हैं। इस कथन की सप्रमाण संपुष्टि कीजिये।
- 'प्रसाद के नाटक भारत के इतिहास का पुनर्निर्माण करते हैं।' 'स्कंधगुप्त' नाटक के संदर्भ में इस कथन की व्याख्या कीजिए।
- "प्रसाद जी के नाटक न सुखांत हैं न दुखांत, बल्कि वे प्रसादान्त हैं।" इस कथन पर अपनी सहमति-असहमति व्यक्त कीजिए।
- "स्कंदगुप्त' नाटक राष्ट्रीय उन्नति की संवेदना को प्रकट करता है।" विवेचना कीजिए।

आषाढ़ का एक दिन
(मोहन राकेश)

- 'आषाढ़ का एक दिन' शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए उसकी आधुनिक प्रासंगिकता की समीक्षा कीजिए।
- नाटकीय तत्वों के आलोक मे 'आषाढ़ का एक दिन' आपको किन-किन बिन्दुओं पर आकृष्ट करता है? तर्कपुष्ट ढंग से अपना अभिमत प्रकट कीजिए।
- रंगमंचीय सम्भावनाओं की दृष्टि से किए गए एक प्रयोग के रूप में ' 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर विचार कीजिए।
- 'रंगमंच' की दृष्टि से 'आषाढ़ का एक दिन' की विवेचना कीजिए।
- "'आषाढ़ का एक दिन' का कालिदास दुर्बल नही है; कोमल, अस्थिर और अंतर्द्वंद्व से पीड़ित है।" इस कथन की सप्रमाण संपुष्टि कीजिए।
- "मल्लिका की अनन्यता एवं सात्विक प्रेम 'आषाढ़ का एक दिन' की महती उपलब्धि है। उसके चरित्र में भारतीय आदर्श ललना साकार हो उठी है।" इस कथन की तर्कसंगत मीमांसा कीजिए।
- 'आषाढ़ का एक दिन' की मल्लिका स्वाधीन चेता स्त्री के जीवन के स्वाभिमान और विडंबना को चरितार्थ करती है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।
- 'आषाढ़ का एक दिन' की नाट्य वस्तु में मंचन क्षमता की सुरक्षा, भावना और यथार्थ का सामंजस्य, जीवन की कटुता और असफलता का निरूपण पाया जाता है। इसे स्पष्ट कीजिए

गोदान (प्रेमचंद)

- अभिजात वर्ग और नागरिक जीवन का चित्रण प्रेमचन्द्र ने बहुत कम किया है_ और जहाँ ऐसे स्थल आए हैं, वहाँ उनका मन रमा नहीं है।'' गोदान की इस आधार पर समीक्षा कीजिए।
- गोदान भारतीय किसान के संघर्ष की महागाथा है- परीक्षा कीजिए।
- 'गोदान स्वतंत्रता-पूर्व के भारतीय ग्राम-जीवन में नगर-जीवन के हस्तक्षेप की कथा है'µ परीक्षा कीजिए।
- 'गोदान अपने युग का प्रतिबिम्ब भी है और आने वाले युग की प्रसव-पीड़ा भी।' इस कथन की तर्कसंगत व्याख्या कीजिए।
- 'गोदान' पीढ़ियों की संघर्ष- कथा है, जिसमें पुरानी पीढ़ी (होरी) नयी विद्रोही पीढ़ी (गोबर) से टकरा रही है। युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।
- 'सभी प्रकार के मानवों को गहराई से समझने के साथ-साथ प्रेमचन्द, सभी पात्रें का सहज मानवीय सहानुभूति के साथ चित्रण भी करते है।' निरूपित कीजिए कि यह कथन 'गोदान' के पात्रें के संबंध में कहाँ तक संगत है।
- गोदान में शहरी और ग्रामीण कथा का पारस्परिक गफुंन, उपन्यास की गठन को शिथिल बना देता है। इस कथन की परीक्षा कीजिए।
- 'गोदान एक साधारण भारतीय किसान की करूण कथा है।' युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

- 'गोदान' में चिन्हित कृषक-जीवन की समस्याओं के निदान और समाधान पर प्रेमचन्द का पक्ष प्रस्तुत कीजिए।
- मालती और मेहता के पारस्परिक संवादों से उभरने वाले जीवन-दर्शन को स्पष्ट कीजिए और अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त कीजिए।
- 'गोदान में भारतीय कृषक के शोषण के विभिन्न रूपों का उल्लेख हुआ है।' स्पष्ट कीजिए।
- 'गोदान किसान जीवन का ही नहीं, सम्पूर्ण भारतीय जीवन का महाकाव्य है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।
- 'गोदान' कृषक-जीवन का एक गद्य-महाकाव्य है।'' इस उक्ति की पुष्टि कीजिए।
- क्या आप गोदान को राष्ट्रीय प्रतिनिधि-उपन्यास की संज्ञा से विभूषित कर सकते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
- 'गोदान' में प्रस्तुत गाँव और शहर की कथाओं के सम्बंध पर विचार करते हुए उपन्यास की उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
- भारतीय ग्रामों के यथार्थ की दृष्टि से 'गोदान' और 'मैला आँचल'' का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
- शिल्प एवं भाषा-शैली की दृष्टि से 'गोदान' और 'मैला आँचन' का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
- औपन्यासिक काल की दृष्टि से 'गोदान' उपन्यास की समीक्षा कीजिएं
- क्या आपको गोदान पढ़ते हुए यह लगता है कि होरी का जीवन दुःख का एक लम्बा नाटक है जिसमें सुख के भी कुछ दृश्य हैं? प्रमाण सहित उत्तर दीजिए।
- क्या यह सच है कि प्रेमचन्द्र ने हिन्दी तथा साहित्य की कर्मभूमि ही नहीं बदली बल्कि उसका कायाकल्प भी किया? सप्रमाण उत्तर दीजिए।
- गोदान की बुनावट का विवेचन कीजिए।
- ''गोदान' न केवल कृषक-जीवन का महाकाव्य है, अपितु समूचे युग की व्यथा-कथा है''- इस कथन का पक्षापक्ष-विमर्श प्रस्तुत कीजिए।
- यदि प्रेमचन्द 'गोदान' को उपन्यास के बदले नाटक के रूप में लिखते, तो आपकी दृष्टि में वे उसमें क्या छोड़ते और क्या जोड़ते?
- प्रेमचंद ने हिन्दी में पहली बार गाँव और कृषक जीवन को अपने उपन्यास-लेखन का केंद्रीय विषय बनाया। 'गोदान' के माध्यम से प्रेमचंद की उक्त औपन्यासिक-दृष्टि की सांस्कृतिक समीक्षा प्रस्तुत कीजिए।
- चूंकि कृषक जीवन की समस्या उस समय के भारत की प्रमुख समस्या थी, इसलिये 'गोदान' में कृषक जीवन की ट्रेजडी का आख्यान मानो युगीन समस्याओं का प्रतिनिधि आख्यान है। इस कथन की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिये।
- गोदान न केवल ग्रामीण जीवन का बल्कि समूचे भारतीय जीवन की समस्याओं तथा यत्किंचित संभावनाओं का आख्यान है। इस स्थापना का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण कीजिये।
- "प्रेमचंद के उपन्यास भारतीय कृषक जीवन के सच्चे दस्तावेज हैं।" इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।
- 'गोदान' भारतीय कृषि जीवन का ज्वलंत दस्तावेज है।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।
- "गोदान' के पात्र व्यष्टिपरक न होकर वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में आते हैं।" सिद्ध कीजिए।
- 'गोदान' की भाषा और उसके शिल्प की विशेषताएं बताइए।
- मुंशी प्रेमचंद कृत 'गोदान' भारतीय कृषक–जीवन के वास्तविक धरातल का सटीक चित्रण प्रस्तुत करता है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।
- 'गोदान' की धनिया स्त्री चरित्र का उदत्त रूप है।' सोदाहरण प्रकाश डालिए।
- 'गोदान' भारतीय कृषि जीवन का ज्वलंत दस्तावेज है।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

- 'गोदान' के पात्र व्यष्टिपरक न होकर वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में आते हैं।" सिद्ध कीजिए।
- 'गोदान' की भाषा और उसके शिल्प की विशेषताएं बताइए।
- मुंशी प्रेमचंद कृत 'गोदान' भारतीय कृषक – जीवन के वास्तविक धरातल का सटीक चित्रण प्रस्तुत करता है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

मैला आँचल

फणीश्वरनाथ रेणु

- 'मैला आँचल उपन्यास में आँचलिक जीवन के साथ व्यापक राष्ट्रीय सन्दर्भों का भी बड़ा जीवन्त चित्रण हुआ है।' इस मत का सतर्क मूल्यांकन कीजिए।
- मैला आँचल में व्यक्त जीवन के द्वंद्व का सोदाहरण विश्लेषण करते हुए उसके नाम की सार्थकता पर विचार कीजिए।
- भारतीय ग्रामों के यथार्थ की दृष्टि से 'गोदान' और 'मैला आँचल' का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
- शिल्प एवं भाषा-शैली की दृष्टि से 'गोदान' और 'मैला आँचल' का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
- 'मैला आँचल' की सफ़लता में भाषा के योगदान पर प्रकाश डालते हुए सोदाहरण स्पष्ट कीजिए कि इस संदर्भ में 'रेणु' बहुत सजग, सृजनशील और प्रयोगशील रहे हैं।
- 'मैला आंचल' के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए इसके प्रतिपाद्य का विवेचन कीजिए और एक आंचलिक उपन्यास के रूप में इसकी सर्जनात्मक उपलब्धियों का संक्षेप में परिचय दीजिए।
- इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी- मैं किसी से दामन बचाकर नहीं निकल पायारेणु के इस कथन के आलोक में 'मैला आँचल' का मूल्यांकन कीजिए।
- आंचलिक उपन्यास के रूप में 'मैला आँचल' का मूल्यांकन कीजिए।
- 'मैला आँचल' में निहित सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संक्रमण पर प्रकाश डालिए।
- 'मैला आँचल में अभिव्यक्ति स्त्री-पुरुष संबंध एक नवीन मुक्ति के पक्ष में है।यू इस कथन से आप कहाँ तक सहमत है।? तार्किक व्याख्या कीजिये।
- 'मैला आँचल' 'ग्राम कथा' की कलात्मक परिणिति है या 'आंचलिकता' की स्वतंत्र संरचना? भारतीय आंचलिक उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट कीजिये।
- उपन्यास की भाषा को काव्य का अनुसरण करना क्या श्रेयस्कर माना जाएगा।? 'मैला आँचल' के संदर्भ में तर्क प्रस्तुत कीजिये।
- ''रेणु पाठक को छपे हुए पृष्ठों की सुरक्षित दुनिया से बाहर खींचते हैं और मौखिक परम्परा में प्रवेश कराते हैं।'' 'मैला आँचल' के सन्दर्भ में इस वक्तव्य का विवेचन कीजिए।
- 'मैला आँचल' की राजनीतिक चेतना पर प्रकाश डालिए।
- 'मैला आँचल' के आधार पर उपन्यासकार की जीवनदृष्टि का परिचय दीजिए।
- गाँधीवादी विचारधारा के आलोक में बवानदास के चरित्र का विश्लेषण कीजिए।
- 'मैला आँचल' उपन्यास की भाषा, परिवेश को जीवंत करने में कितनी सफल सिद्ध हुई है? उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।
- आंचलिक उपन्यास के तत्त्वों के आलोक में 'मैला आँचल' उपन्यास की विवेचना कीजिए।

यशपाल- दिव्या

- दिव्या के औपन्यासिक प्रतिमानों का विश्लेषण करते हुए यशपाल के ऐतिहासिक बोध के दार्शनिक आधार पर समीक्षा कीजिए।

- ऐतिहासिक उपन्यास लिखने के पीछे यशपाल की विशेष रचना-दृष्टि रही है। दिव्या के आधार पर उक्त विशेष रचना-दृष्टि की आलोचना कीजिए
- 'दिव्या ऐतिहासिक नहीं, ऐतिहासिक परिवेश की कथा है- विवेचन कीजिए।
- 'दिव्या' उपन्यास देश की गौरवगाथा मात्र नहीं है अपितु आगे की दिशा भी तलाशती है। इस पर विचार प्रस्तुत कीजिए।
- 'दिव्या' में लेखक की यथार्थभेदी दृष्टि से भारत के स्वर्णकाल का इतिहास विरूपित हुआ है या अभिमंडित? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये।
- 'दिव्या' स्त्री स्वतंत्रता का उद्घोष है।' विवेचन कीजिए।
- "'दिव्या' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में व्यक्ति और समाज की प्रवृत्ति और गति का चित्र है।" इस कथन का आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।
- "दिव्या' इतिहास नही, ऐतिहासिक कल्पना मात्र है।" इस कथं के आधार पर 'दिव्या' उपन्यास में इतिहास और कल्पना के समन्वय का विवेचन कीजिए।
- "दिव्या' उपन्यास का मूल प्रतिपाद्य मार्क्सवादी विचारधारा का प्रतिपादन करना है।" इस मत के पक्ष-विपक्ष में अपना तर्कयुक्त उत्तर देते हुए 'दिव्या' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

महाभोज

मन्नू भण्डारी

- राजनीति और अपराध के आपसी संबंधों की औपन्यासिक प्रस्तुति के रूप में 'महाभोज' पर विचार कीजिए।
- 'महाभोज' में समकालीन दलगत राजनीति का जन-विरोधी चरित्र विश्वसनीय तरीके से उभारा गया है- इस बात की परीक्षा कीजिए।
- 'महाभोज' उपन्यास में हमारे वर्तमान समाज और राजनीति का नकारात्मक यथार्थ वर्णन तो विश्वसनीय बन पड़ा है, लेकिन सकारात्मक पहलू हवाई आदर्श बन गया हैय्- इस टिप्पणी के संदर्भ में आप अपना तर्कपूर्ण पक्ष प्रस्तुत कीजिए।
- एक राजनैतिक उपन्यास के रूप में 'महाभोज' का विवेचन कीजिए।
- 'महाभोज' उपन्यास को क्या एक सशक्त राजनीतिक उपन्यास का दर्जा दिया जा सकता है? उपन्यास में चित्रित पात्रें के आधार पर समीक्षा कीजिए।
- 'महाभोज' स्वातं=योतर भारतीय राजनीति की विकृति के पर्दाफास का ज्वलंत दस्तावेज हैय् तर्क एवं उदाहरण सहित सिद्ध कीजिये।
- 'महाभोज' में समसामयिक अव्यवस्था का मात्र निदान है अथवा विधेयात्मक समाधान भी? तर्कपूर्वक समझाइये।
- 'महाभोज' की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।
- 'महाभोज' उपन्यास के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए।
- 'महाभोज' उपन्यास राजनीतिक विकृतियों का सच्चा दस्तावेज है।" इस कथन से आप कितने सहमत हैं, तर्कसंगत मीमांसा कीजिए।
- "मन्नू भण्डारी रचित 'महाभोज' उपन्यास राजनीति में पिसते दलित समाज की दास्ताँ का जीवंत दस्तावेज है।" इसे स्पष्ट कीजिए ।

रामचंद्र शुक्ल (चिन्तामणि : कविता क्या है, श्रद्धा और भक्ति) - निबंध-निलय (सं. डा. सत्येन्द)

- चिन्तामणि में संकलित रामचन्द्र शुक्ल के निबंध विषय-प्रधान हैं या व्यक्तिप्रधान हैं? निर्धारित निबन्धों के आधार पर युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।
- 'चिन्तामणि के निबंधों को आचार्य शुक्ल ने अपनी अर्न्तयात्र में पड़ने वाले कुछ प्रदेश कहा है, जिनमें यात्र के लिए बुद्धि हृदय को साथ लेकर निकलती रही है।' इस कथन के प्रकाश में उनके किसी एक निबंध का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

- *निबंधकार के रूप में 'श्रद्धा-शक्ति' या 'लोभ और प्रीति' के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मूल्यांकन कीजिए।*
- *शुक्लजी के मनोविकार संबंधी निबंधों को मनोवैज्ञानिक कहना समीचीन होगा या साहित्यिक? युक्तिपूर्वक अपने मत की पुष्टि कीजिए।*
- *निबन्धकार के रूप में शुक्लजी की आलोचना करते हुए हिन्दी निबंध के क्षेत्र में उनका स्थान निर्धारित कीजिए।*
- *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबंधों को आप विषय प्रधान मानते हैं या व्यक्ति प्रधान। चिंतामणि भाग-1 के पठित निबंधों के आधार पर अपने मत का तर्कसम्मत प्रतिपादन कीजिए।*
- *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उच्चकोटि के विचारात्मक निबंधों की रचना की है, जिनमें चिन्तन की मौलिकता, विवेचन की गम्भीरता, विश्लेषण की सूक्ष्मता एवं शैली की प्रौढ़ता दृष्टिगोचर होती है।'' चिंतामणि के निबंधों के आधार पर इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।*
- *शुक्लजी के मनोविकारपरक निबंधों में निहित उनकी विचारधारा का ब्यौरेवार उपस्थापन कीजिए।*
- *आचार्य शुक्ल के निबंधों में व्यक्तित्व- व्यंजक उपकरणों पर प्रकाश डालिए।*
- *निबंध 'उन्मुक्त चिंतन है' 'मन की मुक्त भटकन है'µ जैसी अवधारणा को शुक्लजी के निबंध प्रमाणित करते हैं या अप्रमाणित? सोपपत्ति अपना मंतव्य प्रस्तुत कीजिए।*
- *'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबंधों में भावों की भव्यता है, अभिव्यंजना प्रणाली की नव्यता है, विचारों की तीव्रता है, संस्कृति की संशक्त अभिव्यक्ति है और संतुलन की आमोद शक्ति है'µ इस कथन का संपरीक्षण कीजिए।*
- *'निबंध- लेखन में आचार्य शुक्ल ने एक साहित्यकार के रूप में ही भावों अथवा मनोविकारों पर विचार किया है, मनोवैज्ञानिक के रूप में नहीं।'µ इस कथन के विषय में तर्क प्रस्तुत कीजिए।*
- *भाव या मनोविकार क्या हैं? रामचन्द्र शुक्ल ने उनका वर्गीकरण किस रूप में किया है? 'चिन्तामणि' में संग्रहीत भाव का मनोविकार से संबंधित निबंधों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।*
- *'चिंतामणि', भागµएक के निबंधों के आधार पर रामचन्द्र शुक्ल की निबंध कला की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए।*
- *शुक्लजी के मनोविकार सम्बन्धी निबन्धों पर उनकी रसदृज्टि का प्रभाव है- इस विजय में अपने विचार प्रकट कीजिए।*
- *'कविता क्या है'- निबंध के आधार पर सभ्यता के विकास और कविकर्म के द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध निरूपित कीजिए।*
- *'कविता क्या है' निबंध के आधार पर कविता के संबंध में निबंधकार के विचारों का विवेचन कीजिए।*
- *''रामचन्द्र शुक्ल के निबंधों में बुद्धितत्व और हृदय की अनुभूति का सुंदर समन्वय हुआ है।'' इस कथन की विवेचना कीजिए।*
- *श्रद्धा और भक्ति के सामाजिक उपयोग एवं दुरूपयोग पर विचार कीजिए।*
- *'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काव्य विषयक विचार प्रस्तुत कीजिए।*
- *'श्रद्धा-भक्ति' निबंध के आधार पर प्रेम, श्रद्धा एवं भक्ति का अंतःसंबंध स्पष्ट कीजिए।*
- *ललित निबंध की सांस्कृतिक एवं मानवीय पक्षधरता के परिप्रेक्ष्य में कुबेरनाथ राय के ललित निबंध लेखन की समीक्षा कीजिए।*
- *रामचंद्र शुक्ल अथवा कुबेरनाथ राय की निबन्ध कला पर प्रकाश डालिए।*
- *हिन्दी निबन्ध-यात्रा में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की विशिष्ट पहचान को सतर्क रेखांकित कीजिए।*
- *बालकृष्ण भट्ट 'हंसमुख गद्य' के प्रणेता हैं।- सोदाहरण समझाइए।*

- *कुबेरनाथ राय के निबंधों में लालित्य का अनुपात ज्यादा है वैदुष्य का? विचार कीजिए।*
- *जिस तरह से अपने ललित निबंधों में कुबेरनाथ राय भारत ही नहीं, विश्व-भर के नए-पुराने रूपों का हृदय और बुद्धि की कसौटी पर जाँचते हैं, निबंध-क्षेत्र के लिए यह नया बौद्धिक रस संजीवनी बना है-इसका विवेचन कीजिए।*
- *डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में तर्क और विचार के साथ भाव प्रवणता भी है।' इस कथन की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।*
- *'श्रद्धा और भक्ति' के अंतर को स्पष्ट करते हुए आचार्य शुक्ल के निबंधों की विशेषताएं बताइए।*
- *आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध 'कुटज' का तात्विक विवेचन कीजिए।*
- *'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध की ललित निबंध के रूप में तात्विक समीक्षा कीजिए।*
- *'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए।*

प्रेमचन्द्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

एक दुनिया समानांतर

- *राजेन्द्र यादव द्वारा समपादित कहानी संग्रह 'एक दुनिया समानान्तर' में से आप किस कहानी को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं? कहानी-कला के आधार पर अपने मत का सप्रमाण विवेचन कीजिए।*
- *जीवन-यथार्थ के अंकन के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद की कहानी-कला की समीक्षा कीजिए।*
- *अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं। इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर लिखिए।*
- *शिल्प एवं विषय की दृष्टि से स्वातं=योत्तर हिन्दी कहानी पर प्रकाश डालिए।*
- *पठित उपन्यास और कहानियों के आधार पर सोदाहरण सिद्ध कीजिए कि पात्रें के चित्रण में प्रेमचंद ने मनोविज्ञान का पर्याप्त ध्यान रखा है।*
- *'एक दुनिया समानांतर' को ध्यान में रखते हुए नयी कहानी की मुख्य विशेषताओं का विवेचन कीजिए।*
- *एक कहानी संग्रह को संपादक ने 'एक दुनिया समानान्तर' क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।*
- *'एक दुनिया समानान्तर' की किसी एक कहानी की समीक्षा कीजिए।*
- *नई कहानी ने पूर्ववर्ती कहानी का कहां किस रूप में अतिक्रमण किया है? 'एक दुनिया समानांतर' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।*
- *प्रेमचंद की कहानियों में आधुनिक विमर्शों के स्वरूप की पड़ताल कीजिए।*
- *'जिंदगी और जोंक' में रजुआ की जिजीविषा पर प्रकाश डालिए।*
- *'भोलाराम का जीव' के माध्यम से हरिशंकर परसाई की व्यंग्य चेतना पर प्रकाश डालिए।*
- *'चीफ की दावत' मध्यवर्गीय अवसरवादिता और मानवीय मूल्यों के विघटन का जीवंत द्रतवेज है।'' इस कथन की विवेचना कीजिए।*
- *'नयी कहानी' की अवधारणा के संदर्भ में निर्मल वर्मा की कहानी 'परिंदे' की समीक्षा कीजिए।*
- *'चीफ़ की दावत' कहानी नौकरशाही में मानव मूल्यों का अधःपतन तथा दो पीढ़ी के अंतराल का सूक्ष्म निरूपण पाया जाता है। सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।*